Vijay Kumar Jha.
Asso' prof
Deptt in History.
V.S.J. College Rajnagar.

Degree part III

Paper - VIII

## Career and achievement of Kamal Pasha.

आधुनिक चीन में जो स्थान डा० सन्यात सेन का है रूस में लेनिन का वही स्थान तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा का है। कमाल पाशा ने अपने देशवासियों में राष्ट्रवाद, देशभक्ति, एवं क्रांति का शंख फूंका तथा तुर्की में नवजागरण का संचार किया। उसका जन्म 1881 ई० में सेलोनिका के एक साधारण परिवार में हुआ था। उसके पिता अली राजा एफन्दी एक सामान्य सरकारी कर्मचारी थे।

प्रथम विश्वयुद्ध में सेनानायक कि हैसियत से उसने अच्छी ख्याति प्राप्त किया था, किन्तु युवा तुर्क नेताओं से उनका मतभेद हो गया। इस कारण कुछ दिनों तक उन्हें सेनानायक के पद से हटना पड़ा। अंग्रेज पाशा को ईर्ष्या दृष्टि से देखते थे क्योंकि कमाल पाशा के हाथों बहुत से मित्र राष्ट्रों के सैनिक मारे गये थे। तुर्की के सुल्तान भी मित्र राष्ट्रों के इशारे पर नाचते थे अतः सुल्तान ने पाशा को अनातोलिया का फौजी इन्सपेक्टर बनाकर दूर भेज दिया। पाशा के लिये यह एक अच्छा अवसर मिला। उसने अपने थोड़े से साथियों को संग लेकर आन्दोलन कि तैयारी करने लगे। अनातोलिया में ठहरे सैनिक अफसरों ने भी पाशा को मदद किया।

1919 ई० में इटली ने फ्रांस और इंगलैण्ड के साथ किये गये गुप्त संधि को पूरा करने के लिये तुर्की में एसिया माइनर तथा स्मर्ना पर कब्जा करने के लिये सेना भेज दिया। इंगलैण्ड और फ्रांस ने इसको नकार दिया तथा यूनानी फौज को ~~सहारे~~ इटली के विरुद्ध स्मर्ना पर अधिकार करने कि इजाजत दे दी। यूनानी फौज तुर्की में बड़ी बर्बरता से पेश आया। समस्त तुर्की में हाहाकार मच गया। ऐसे में कमाल पाशा ने तुर्की के लोगों को भड़काने का कार्य किया और राष्ट्रीय आन्दोलन करने कि अपील की।

Scanned with Cam

सेव्र की संधि : और मुस्तफा कमाल पाशा : — प्रथम विश्वयुद्ध के बाद मित्र राष्ट्रों ने तुर्की के साथ सेव्र कि संधि की थी, जो आरोपित संधि था। इससे तुर्की साम्राज्य का अस्तित्व ही मिट जाता। सेव्र कि संधि तुर्की के लिये अपमानजनक संधि थी अतः कमाल पाशा ने इस संधि का घोर विरोध किया। वह तुर्की के सुल्तान का कट्टर विरोधी था।

प्रथम महान राष्ट्रीय सभा कि बैठक : — कमाल पाशा तुर्की को मित्र राष्ट्रों के चंगुल से मुक्ति करना चाहता था। अब तुर्की के राष्ट्रवादी लोग भी मुस्तफा कमाल पाशा को साथ देने लगे। शीघ्र ही अनातोलिया में एक समानान्तर सरकार कि स्थापना हुई जिसकी राजधानी अंकारा बनाया गया। प्रथम महान राष्ट्रीय महासभा कि बैठक में पाशा को राष्ट्रीय सेना का सेनापति नियुक्त किया गया। कमाल पाशा को तुर्की पर शासन करने का अधिकार जनता के प्रतिनिधि कि हैसियत से मिला। एसेम्बली के सदस्यों का चुनाव चार वर्षो के लिये होना तय हुआ। तुर्की कि ये सरकार ने सेव्र कि संधि का बहिष्कार किया तथा अंकारा स्थित स्वतंत्र सरकार ने युनान और इटली के विरुद्ध युद्ध कि घोषणा कर दी। तुर्की के सुल्तान जो मित्र राष्ट्रों के कठपुतली थी ने घोषणा कर तुर्की के जनता को अंकारा के सरकार से संबंध नही रखने को कहा गया पर जनता पर इसका कोई असर नही पड़ा। आरमेनिया, इटली फ्रांस, ग्रीस और इंगलैण्ड जो तुर्की के शत्रु थे, परन्तु रूस ने अंकारा कि सरकार को इन विदेशी शत्रुओं के विरुद्ध मदद का आश्वासन दिया फलतः सभी शत्रुओं ने तुर्की से समझौता कर लिया। अब युनान और इंगलैण्ड ही ऐसे देश थे जो कमाल पाशा से उलझना चाहते थे इनमें युनान ने भी कमाल पाशा से हार मान ली।

1922ई० में ऐसा प्रतीत होने लगा कि सिर्फ इंगलैण्ड और तुर्की में युद्ध अवश्यम्भावी हो गया, किन्तु तुर्की के पीछे रूस का हाथ होने के भय से इंगलैण्ड तुर्की के साथ लड़ना नहीं चाहता था क्योंकि तुर्की अब राष्ट्रीयता एवं नवीन भावना से अति उत्साह में था उसकी शक्ति को चुनौती नही दिया जा सकता था।

लोजान कि संधि : — लोजान कि संधि के अनुसार तुर्की राष्ट्रवादियों ने राष्ट्रीय समझौता में जिन बातों कि पूर्ति की उसे इंगलैण्ड स्वीकार कर लिया था यूरप में तुर्की का

JULY 2019
| Su | Mo | Tu | We | Th | Fr | Sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | 31 | | | |

Scanned with Cam

अनातोलिया, कुस्तुनतुनिया पर अधिकार हो गया। ईसाइयों कि सारी सुविधायें छीन लिया गया था। तुर्की पर लगाये गये समस्त आर्थिक एवं सैनिक प्रतिबन्ध हटा लिये गये और विदेशी प्रभाव पूर्णतः समाप्त हो गया।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद जितनी भी संधियां हुई उसमें केवल लोजान कि संधि ही ऐसी थी जो दोनों पक्षों के बीच आपसी समझौता से हुआ था। तुर्की के राजनीतिक क्षेत्रफल कुछ कम किया गया था। तुर्की अब सब कुछ प्राप्त कर लिया था जो उन्हें खोना पड़ा था। यह संधि यूरोपीय देशों के लिये घोर अपमान जनक संधि थी। किन्तु इन्हें स्वीकार करने के अलावा उनके पास कोई उपाय नहीं बचा था। ऐसे गौरवपूर्ण विजय प्राप्त करने के बाद पाशा ने सैन्य शक्ति को और बढ़ाया और इसका प्रधान कार्यालय अंकारा में स्थापित किया। कमाल पाशा ने निश्चित रूप से लोजान कि संधि से सेव्र कि कलंक को धोया। 23 अक्टूबर 1923 ई० को तुर्की गणराज्य कि घोषणा हुई। मुस्तफा कमाल पाशा को इस नये गणतंत्र का प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित किया गया और तुर्की कि राजधानी स्थायी तौर पर कुस्तुनतुनिया से हटाकर अंकारा बनाया गया। सुल्तान को खलीफा के पद पर बने रहने दिया गया। 1924 ई० के मार्च में खिलाफत का भी अन्त कर दिया गया। पुराने काजियों को मिले न्याय सम्बन्धी अधिकार छीन लिये गये और शासन को धर्म से अलग कर दिया गया। अप्रिल 1924 में तुर्की गणराज्य के लिये नवीन संविधान कि घोषणा हुई। इस तरह मुस्तफा कमाल पाशा ने नवीन संविधान कि घोषणा कर तुर्की में एक लोकप्रिय धर्मनिरपेक्ष सरकार कि स्थापना किया।

Scanned with Cam